|                            |  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुद्भू। तः   | त्त्वं पूषत्रपावृण् Journal of Foundational Research जु सत्य  |
|----------------------------|--|--|---|
|                            | सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूष <b>़Contents</b> यधर्माय दृष्टये।। हिरप  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुट्टैम्। त  |   |
|                            |  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मु <mark>ख्</mark> म्। तः  | तत्त्वं पूषत्रपावृण् सत्यधर्माय दुVolume XXXII, Number II-July 2024तत्त्वं पूषत्रपावृण् सत्य  |
|                            |  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुळम्। तः  |   |
|                            | Contributors in this issue<br>सत्यस्थापिहत मेखमा तत्व प्रवत्नपावण सत्यधर्माय दृष्ट्रये।। हिरण                                | मयेन पात्रेण <sup>iw</sup> तयस्यापिहितं मुख्नम्। तः  | तत्वं प्रवन्नपावणISSN 2395-5635 हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितंUGC-CARE Indexed सत्य   |
|                            | सत्Editorialतं मखम। तत्त्वं पषत्रपावण सत्यधर्माय दृष्ट्र्ये।। हिरप   | मयेन पात्रेण जत्यस्यापिहितं मर्खन्म। त   |   |
|                            |  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मु <mark>द्</mark> ये। तः  |   |
|                            | सत्यस्यापिहितं मखम। तत्त्वं पArticles सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरप  | मर्यन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मर्ष्नम्। त   |   |
|                            | सत्यस्यापिहितं मखम्। तत्त्वं पषत्रपावण सत्यधर्माय दृष्ट्या। हिर  | मरोन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मज्म। त  |   |
| न पात्रेश                  | स Humano-Centric Religion: A Reflection on दृष्ट्ये।। हिरप   | मयेन 108मा 15त्यस्यापिहितं मध्धेम्। त  |   |
| ਾ ਪਾਣਾ।<br>ਜ ਧਾੜੇਗ         | Bankimchandra's Philosophy and a start and a start   | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मु <mark>द</mark> िम्। त   |   |
|                            | Jhadeswar Ghosh<br>Jhadeswar Ghosh<br>स्वार्थ्यापिटित मखम्। तन्त्र पहन्यापत्ता स्वराध्यमा रखो।। दिग                          | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मन्द्रम्। तः   |   |
| $= \frac{1}{1}$            | Kautilya's Theory of State, Diplomacy and Values: Some   |  |   |
|                            |  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मु <mark>र्ट्या</mark> । तः                                      |   |
|                            | सत्Laxmikanta Padhi तत्त्व पूषञ्चपावृणु सत्यधमीय दृष्टये।। हिरण  | मयन पात्रेण सत्यस्थापिहितं मु%्रम्। तः<br>मयेन पुत्रूत्वेण सत्यस्थापिहितं मु%्रम्। तः        | तत्व पूर्वत्रपावृणु सत्यधमाय दृष्टया। हिरण्मयन <b>Chief Editor</b><br>सन्द्र प्राप्तायण प्रत्यार्थप्र त्राणे । निराणयेन प्राप्ते हेलाना क्यिनिन प्रायप्र तन्त्र प्राप्तायण प्रत   |
| 3.                         | Ethical Teachings of <i>Bodhipathapradīpa</i> : Some   |  | तत्व पूषञ्चपावृणु सत्यधमयि दृष्ट्ये।। हिरण्मArvind Vikram Singh मुखम्। तत्त्व पूषञ्चपावृणु सत्य<br>स्वा प्राप्त्र प्राप्त्र स्वर्ण्याप् स्वर्ण्याः विजयप्रेत्र प्राप्त्रेण्य स्वयप्राणिविनं प्रावयः। स्वा प्राप्त्र                 |
|                            | सत्Reflections मुखम्। तत्त्व पूषत्रपावृणु सत्यधमाय दृष्टये।। हिरण<br>Raj Verma Sinha   | मयन पात्रेण सत्यस्यापिहित मु <del>र्</del> त्वम्। त<br>मरोन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मर्खम्। त | तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मयेन पात्र <mark>Editor</mark> स्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य<br>तत्त्वं पषन्नपावण सत्यधर्माय दष्टये।। हिरण्मAnubhav{Varshneyतं मखम्। तत्त्वं पषन्नपावण सत्य            |
| न पात्रण<br>न नन्ने        | सत्यरयाणिहत मुखम्। तत्त्व पूर्षश्रेपावृणु सत्यधमाय दृष्टया। हिरप   |  |   |
| ㅋ ੫!;;; <del>4</del> ;<br> | On Why Emotions Are Not Reducible to Feelings: Assessing the Prospects of Construing Emotions as                             | मयन् 135म150त्यस्यापिहितं मुन्न्स्। त  | तत्व पूषत्रपावृणु सत्यधर्माय दृष्ट्ये।। हिरण्मःAssociate Editors त मुखम्। तत्त्व पूषत्रपावृणु सत्य<br>नन्तं एषचणातण सत्यधर्मात दृष्ट्ये।। दिराण्ण Manish Sinsinwara मजम्। तत्त्वं एषचणातण सत्य                                      |
|                            | Action Programs  |  | नत्व पूर्वत्रपावृणु सत्यधमाय दृष्टया। हिरण्मयाव्याक्रम शर्पकर्णायहत मुखम्। तत्त्व पूर्वत्रपावृणु सत्य<br>Manish Gothwalo  |
|                            | सत्Mahak।Uppalyखम्। तत्त्व पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरप  |  |   |
| न पात्रमु                  |  | मयन 157-160 त्यस्थापिहितं मुखम्। तः  |   |
|                            | सत्Sanchayaita Sentı तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधमयि दृष्टये।। हिरण  | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुर्थ्धेन्। तः  |   |
|                            | सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपिवृणु सत्यधमीय दृष्टये।। हिरप   | मयन पात्रण सत्यस्यापिहित मुस्झम्। तः   | त्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टयु।। हिरण्मयुन पात्रण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य   |
|                            | सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं प्रूरिश्मंहणुArticleमयि दृष्टये।। हिरण   | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुख्यू। त   |   |
| न पात्रेष्ठा               | Hannah Arendt and the Archaeology of Violence: A   | मयेन 1612पारगत्यस्यापिहितं मुर्द्रम्। तः   | तत्व पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मयेन पात्रेण प्रत्युस्थापिहित मुखम्। तत्त्व पूषन्नपावृणु सत्य   |
|                            | Thematic-Critique of Ambika Datta Sharma and II Vishwanath Mishra's Stance   | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुर्खुम्। तः   | तत्व पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्ट्ये।। हिरण्मयेन द्रियुत्त कर्जुक्यूपिहित मुखम्। तत्त्व पूषन्नपावृणु सत्य  |
|                            | सत्स्वात्राणाहतं मुखम्। तत्त्वं पूर्षत्रपावृणु सत्यधमयि दृष्टये।। हिरप   |  | तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्ट्ये।। हिरण्मये हिर्णु किन्दु हैत मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य  |
|                            |  | - · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·  | तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मये कि जित्तु कि तिन्द्र के हेतं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य<br>तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मये दिपात्रेण, विद्यस्य के हेतं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य |
|                            | सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषत्रObituaryयधर्माय दृष्टये।। हिरप   |  | १त्त्वं पूर्वत्रपावृणुं सत्यधमायं दृष्टये।। हिरण्मय <b>भूक्ष्र्रणे 送 यभूष्ट्रा</b> हतं मुखम्। तत्त्वं पूर्वत्रपावृणुं सत्य  |
| न पात्रेण<br>्7.           | सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूर्णत्रपावृण् सत्यधर्माय दृष्ट्ये।। हिर्ण<br>A Tribute to Professor Siddheswar Ramshwar Bhatt | मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुर्ख्यम्। तः<br>171-172   | तत्त्वं पूषन्नपावृणुं सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मयेन पर्वस्वज्ञान्ध्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणुं सत्य  |
| न पात्रेण                  |  |  |   |
| न पात्रेण<br>४.            | सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषत्रपावण् सत्यधर्माय दृष्ट्ये।। हिरण<br>Professor Gouranga Charan Nayak: As I Knew Him       |  |   |
| न पात्रेण                  | स Ganesh Prasad Das तत्त्व पूर्वत्रपावृणु सत्यधमाय दृष्टये।। हिरप  | मयेन पत्रिण सत्यस्यापिहितं मुर्भ्वेन्। त   |   |
|                            |  |  |   |
|                            |  |  | त्त्वं पूर्षत्रपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये Department of Philosophy त्वं पूर्षत्रपावृणु सत्य  |
|                            |  |  | त्त्वं पूषत्रपावृणु सत्यधर्माय University of Rajasthan, Jaipur (षत्रपावृणु सत्य   |
|                            |  |  | तत्त्वं पूर्षन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मयेन पात्रेण <mark>2024</mark> यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूर्षन्नपावृणु सत्य   |
|                            |  |  | नत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य   |
|                            |  |  |   |

पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्। तत्त्व पूषन्नपावृण् सत्यधमीय दृष्टये।। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यध्यापिहित मुखम्। तत्त्व पूषन्नपावृण् सत्यधमीय दृष्टये।। हिरण्मयेन पात्रेण सत्यध्यापिहित मुखम्। तत्त्व पूषन्नपावृण् सत्यधमीय द्

# Journal of Foundational Research

### **Editorial Board**

Abha Singh, Professor, Patliputra University, Patna Ambika Datta Sharma, Professor, Harisingh Gour University, Sagar Asha Mukherjee, Ex-Professor, Visva-bharati, Shantiniketan Ashok Vohra, Ex-Professor, University of Delhi, New Delhi Balaganapathi Devarakonda, Professor, University of Delhi, New Delhi Daniel Raveh, Professor, Tel Aviv University, Tel Aviv, Israel Dilipkumar Mohanta, Professor, Calcutta University, Kolkata H. S. Prasad, Ex-Professor, University of Delhi, New Delhi Indoo Pandey Khanduri, Professor, HNB Garhwal University, Srinagar Jatashankar, Ex-Professor, University of Allahabad, Prayagraj J. L. Shaw, Ex-Professor, Victoria University, Wellington, New Zealand P. K. Mukhopadhyay, Ex-Professor, Jadavpur University, Kolkata P. P. Gokhale, Ex-Professor, SP Pune University, Pune P. R. Bhat, Ex-Professor, IIT Bombay, Mumbai Raghunath Ghosh, Ex-Professor, North Bengal University, Darjeeling Ramesh Chandra Sinha, Ex-Chairperson ICPR, New Delhi S. Panneerselvam, Ex-Professor, University of Madras, Chennai Sachchidanand Mishra, Member-Secretary ICPR, New Delhi Founder Editor

Biswambhar Pahi, Late Ex-Professor, University of Rajasthan, Jaipur **Chief Editor** 

Arvind Vikram Singh, Professor, University of Rajasthan, Jaipur **Editor** 

Anubhav Varshney, Assistant Professor, University of Rajasthan, Jaipur Associate Editors

Manish Sinsinwar, Assistant Professor, University of Rajasthan, Jaipur Manish Gothwal, Assistant Professor, University of Rajasthan, Jaipur

The *Journal of Foundational Research* is published biannually, in January and July by the Department of Philosophy, University of Rajasthan, Jaipur-302004, Rajasthan, India.

No paper in this Journal or any part of it may be reproduced, without the publisher's written permission. The present issue was published in July 2024, with partial financial assistance from University of Rajasthan.

### Submission of manuscripts

Submissions to the *Journal of Foundational Research* must be made through online submission link available at: www.unirajphilosophy.ac.in or at editorjfruniraj@gmail.com

Instructions for contributors can be found at the aforementioned website and at the back of this issue.

Price: INR 150 (Individual) INR 300 (Institution)

Printed by: Technocrat Printers Pvt. Ltd., Jaipur

| a. | Language:                 | The paper could be in either English or Hindi or Saṁskrta.   |
|----|---------------------------|--|
| b. | Originality of the paper: | The paper must not have been previously published elsewhere, nor should  |
|    | originality of the paper. | it be under-consideration or under-publication in another journal. The   |
|    |                           | authors are requested to undertake a plagiarism check before submission.   |
|    |                           | If the paper has been adapted from one's own doctoral or post-doctoral   |
|    |                           | work, the same must be duly acknowledged. In case of any discrepancy of  |
|    |                           | the sort pertaining to this and/or any other guideline, the legal onus shall   |
|    |                           | lie entirely with the author.  |
| с. | Review of submissions:    | Submitted paper shall undergo double blind review and published  |
|    |                           | subsequent to referee reports.   |
| d. | Blinded Manuscript:       | The paper must be submitted anonymously to enable blind review,  |
|    |                           | following the submission link available on the journal's website. The  |
|    |                           | manuscript must not bear name or other identities of the author(s). The name, institutional affiliation, mail-address for correspondence, may be |
|    |                           | submitted in a separate document, i.e., the title page.  |
| e. | Abstract and Keywords:    | An abstract of around 150 words and 3-8 keywords must be added at the  |
|    | nootract and ney nor asi  | beginning of the main text.  |
| f. | Main Text:                | Kindly use end-noting. Notes and references must follow the same style as  |
|    |                           | the remaining of the manuscript. Kindly avoid lengthy end-notes, keeping   |
|    |                           | the same to a minimum.   |
| g. | Referencing:              | MLA or Chicago style may kindly be preferred.  |
| h. | Font style:               | For English, kindly follow Cambria or Times New Roman, font size 12, 1.5   |
|    | La la la la la Deserve    | spacing. For Hindi, Kruti Dev font style is preferred.   |
| i. | Interdisciplinary Papers  | Only such interdisciplinary papers shall be considered which have to do  |
|    |                           | primarily with philosophy or unravel a fresh intersection of another<br>discipline with philosophy, Contributors making interdisciplinary        |
|    |                           | submissions must avoid jargon and nuances of other disciplines.  |
| j. | Length of paper:          | Normally papers (inclusive of notes and references) exceeding 10,000   |
|    | 8                         | words shall not be accepted.   |
| k. | After Review:             | The authors will be communicated changes if any and given a time period  |
|    |                           | of not more than five days to make the moderations.  |
| ι. | After Acceptance:         | The authors will be intimated and may be mailed a paper-set soft copy of   |
|    |                           | manuscript for proof reading. The same must be done within five days.  |
|    |                           | Only minor changes shall be entertained at this stage.   |
| m. | Author's copy:            | Contributing authors shall receive for free a soft-copy and a hard copy of   |

**Research Notes and Comments**: The journal welcomes brief research notes and comments upon research articles published in it. Such comments will be open for rejoinders by the original author. Normally, no more than two round of comments and rejoinders will be allowed. Such comments and rejoinders must be brief and must not exceed 1000 words. Set of instructions and procedure for publication of notes and comments/rejoinders is same as that for full-fledged articles.

Request to Authors: The authors are requested to bear in mind that it may take over a year for a final decision on their submission. As such, the authors are sincerely requested not to make any inquiries on their submission before a year.

#### Journal Submission, Subscription and Enquiry

#### Submission Link:

Blind manuscript, along with a separate title page may be mailed for consideration to editorjfruniraj@gmail.com

Subscription Fee:

| Subscription Type | Individual | Institution |
|-------------------|------------|-------------|
| Single Issue      | INR 150/-  | INR 300/-   |
| Annual            | INR 300/-  | INR 600/-   |
| Seven Years       | INR 2000/- | INR 4000/-  |

Subscription Form may be downloaded from the Download section of the journal's website. Duly filled forms may be mailed at editorjfruniraj@gmail.com or hodphilosophyuniraj@gmail.com or sent to the Head, Department of Philosophy, University of Rajasthan, Jaipur-302004, through post.

**Payment Mode-** NEFT of the requisite amount may be made in favour of "Seminar and Students Fund, Department of Philosophy, University of Rajasthan Jaipur", A/C No.-674701702067, IFSC-ICIC0006747, ICICI Bank, Bapu Nagar Branch, Jaipur. NEFT details must be mentioned in the form.

Contributors shall get a hard-copy of the issue consisting of their paper, for free.

### Contact the Journal:

For submission or publication related inquiries mails be sent

to hodphilosophyuniraj@gmail.com or editorjfruniraj@gmail.com

Journal's website : www.unirajphilosophy.ac.in

# Journal of Foundational Research

Volume XXXII, Number II-July 2024

ISSN 2395-5635

**UGC-CARE** Indexed

Chief Editor Arvind Vikram Singh Editor Anubhav Varshney Associate Editors Manish Sinsinwar Manish Gothwal



Department of Philosophy University of Rajasthan, Jaipur 2024

# Journal of Foundational Research

### **Editorial Board**

Abha Singh, Professor, Patliputra University, Patna Ambika Datta Sharma, Professor, Harisingh Gour University, Sagar Asha Mukherjee, Ex-Professor, Visva-bharati, Shantiniketan Ashok Vohra, Ex-Professor, University of Delhi, New Delhi Balaganapathi Devarakonda, Professor, University of Delhi, New Delhi Daniel Raveh, Professor, Tel Aviv University, Tel Aviv, Israel Dilipkumar Mohanta, Professor, Calcutta University, Kolkata H. S. Prasad, Ex-Professor, University of Delhi, New Delhi Indoo Pandey Khanduri, Professor, HNB Garhwal University, Srinagar Jatashankar, Ex-Professor, University of Allahabad, Prayagraj J. L. Shaw, Ex-Professor, Victoria University, Wellington, New Zealand P. K. Mukhopadhyay, Ex-Professor, Jadavpur University, Kolkata P. P. Gokhale, Ex-Professor, SP Pune University, Pune P. R. Bhat, Ex-Professor, IIT Bombay, Mumbai Raghunath Ghosh, Ex-Professor, North Bengal University, Darjeeling Ramesh Chandra Sinha, Ex-Chairperson ICPR, New Delhi S. Panneerselvam, Ex-Professor, University of Madras, Chennai Sachchidanand Mishra, Member-Secretary ICPR, New Delhi Founder Editor

Biswambhar Pahi, Late Ex-Professor, University of Rajasthan, Jaipur **Chief Editor** 

Arvind Vikram Singh, Professor, University of Rajasthan, Jaipur **Editor** 

Anubhav Varshney, Assistant Professor, University of Rajasthan, Jaipur Associate Editors

Manish Sinsinwar, Assistant Professor, University of Rajasthan, Jaipur Manish Gothwal, Assistant Professor, University of Rajasthan, Jaipur

The *Journal of Foundational Research* is published biannually, in January and July by the Department of Philosophy, University of Rajasthan, Jaipur-302004, Rajasthan, India.

No paper in this Journal or any part of it may be reproduced, without the publisher's written permission. The present issue was published in July 2024, with partial financial assistance from University of Rajasthan.

Submission of manuscripts

Submissions to the *Journal of Foundational Research* must be made through online submission link available at: www.unirajphilosophy.ac.in or at editorjfruniraj@gmail.com

Instructions for contributors can be found at the aforementioned website and at the back of this issue.

Price: INR 150 (Individual) INR 300 (Institution)

Printed by: Technocrat Printers Pvt. Ltd., Jaipur

## Contents

| Contributors in this issue | iv |
|----------------------------|----|
| Editorial                  | v  |

## Articles

| 1. | Humano-Centric Religion: A Reflection on<br>Bankimchandra's Philosophy<br><b>Jhadeswar Ghosh</b>   | 108-115 |
|----|--|---------|
| 2. | Kautilya's Theory of State, Diplomacy and Values: Some<br>Observations<br><b>Laxmikanta Padhi</b>  | 116-125 |
| 3. | Ethical Teachings of <i>Bodhipathapradīpa</i> : Some<br>Reflections<br><b>Raj Verma Sinha</b>  | 126-134 |
| 4. | On Why Emotions Are Not Reducible to Feelings:<br>Assessing the Prospects of Construing Emotions as<br>Action Programs<br><b>Mahak Uppal</b>   | 135-150 |
| 5. | The Origin of Uniqueness of Self-Awareness<br>Sanchayaita Sen  | 151-160 |
|    | <b>Review Article</b>  |         |
| 6. | Hannah Arendt and the Archaeology of Violence: A<br>Thematic Critique of Ambika Datta Sharma and<br>Vishwanath Mishra's Stance<br><b>Rajan</b> | 161-170 |
|    | Obituary   |         |
| 7. | A Tribute to Professor Siddheswar Ramshwar Bhatt<br><b>S. Panneerselvam</b>  | 171-172 |

8. Professor Gouranga Charan Nayak: As I Knew Him 173-175 Ganesh Prasad Das Jhadeswar Ghosh Professor Department of Philosophy and the Life-world Vidyasagar University, Midnapore

Laxmikanta Padhi Professor Department of Philosophy University of North Bengal, Darjeeling

Raj Verma Sinha Associate Professor Department of Philosophy, Miranda House College University of Delhi, New Delhi

> Mahak Uppal Post Doctoral Fellow Department of Philosophy University of Delhi, New Delhi

Sanchayaita Sen Department of Philosophy Jadavpur University, Kolkata

Rajan Assistant Professor of Philosophy Azim Premji University, Bhopal

S. Panneerselvam Former Professor Department of Philosophy University of Madras, Chennai

Ganesh Prasad Das Former Professor Department of Philosophy Utkal University, Bhubaneshwar